समाचार लेखन में अन्तर्रात्मा की आवाज सुने मीडियाकर्मी-दादी जानकी

माउण्ट आबू, 23 मई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने ज्ञान सरोवर में आयोजित राष्ट्रीय मीडिया सेमिनार का उद्घाटन करते हुए मीडियाकर्मियों को प्रेरणा दी कि समाचार लेखन से पूर्व ह्दय की आवाज सुनकर यह तय करें कि क्या जिस समाचार कि रचना करने जा रहे हैं उससे समाज का अहित तो नहीं होगा।

शुद्धता एवं ईमानदारी को अपनी कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग बनाने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि स्व सेवा के बाद विश्व सेवा करने की शक्ति प्राप्त करना आसान होगा। स्वयं से स्नेह करना सीखें। दुआयें मांगने से नहीं बल्कि सदैव प्रसन्न एवं संतुष्ट रहने से मिलती है। लोग दु:खी होना जानते है सुखी होना नहीं। बुरा देखना, बुरी बात करना या सुनना पाप है। विश्वास रखना चाहिए कि यदि हमारी कार्यशैली से बुराई बाहर हो गयी तो दूसरों की बुराई भी समाप्त हो जायेगी। नकारात्मकता प्राय: सकारात्मकता को दबाने का यत्न करती है। इस स्थिति से बचने के लिए हमें व्यर्थ विचार त्यागने होंगे, क्योंकि व्यर्थ विचार ही हमारी सम्पूर्ण शक्तियों को नष्ट कर देते हैं। परमात्मा की शिक्षाओं को समझों और अपनाओ।

इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नालिस्ट के अध्यक्ष के. विक्रम राव ने पत्रकारों से कहा कि अहिंसक तरीके से अत्याचार, अनाचार व अन्याय का डटकर विरोध करें। दोष को छिपाने की प्रवृत्ति समाप्त होनी चाहिए। मीडिया पर मंडी का कब्जा हो रहा है। भारतीय पत्रकारिता में पैदा हुई खरपतवार को समाप्त करना होगा। आर्थिक पत्रकारिता में विशेष रूप से भ्रष्टाचार बढ़ना सभी के लिए चिंता का विषय है। सत्ता पक्ष के नजदीक जाने की लोलुप्ता की बजाय जनपक्ष को उभारा जाना चाहिए। श्री राव ने सुझाव दिया कि बेलगाम होते मीडिया के नियमन के लिए भारतीय संसद, प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक मीडिया व न्याय पालिका के प्रतिनिधित्व पर आधारित मीडिया परिषद का गठन करें, क्योंकि प्रेस परिषद मृत प्राय: हो गयी है।

नागपुर से पधारी शिवानी के स्वागत नृत्य के बाद अपने सम्बोधन में मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र. कु. ओमप्रकाश ने कहा कि मीडिया में किसी देश के निर्माण और विध्वंस करने की समान शक्ति है। भारतीय मीडिया को महसूस करना चाहिए कि धनोपार्जन की लालसा व प्रतिस्पर्धा के कारण मूल्यों का निरंतर पतन हो रहा है। फर्जी स्टिंग आपरेशन के कारण इलेक्ट्रानिंक मीडिया ने लोगों का विश्वास खोया है।

संस्था के महासचिव ब्र. कु. निर्वेर ने मीडिया की भूमिका को वर्तमान परिवेश में अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि हमारा देश भले ही विकास की कई सीढ़ियां तय कर चुका है लेकिन कुल आबादी के एक तिहाई भाग का दरिद्रता की रेखा के नीचे जीवन बसर करना अभिशाप माना जायेगा। हमारे सामेन चुनौती देश को आगे बढ़ाने की नहीं बल्कि बचाने की है।

आन्ध्र प्रदेश के पूर्व सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक डा. सी. वी. नरसिम्हा रेडडी ने कहा की आजादी के बाद भारत में समाचार पत्रों की संख्या तीन हजार से बढ़कर 65 हजार हो गयी, लेकिन गुणवत्ता के मामले में मीडिया बुरी तरह से पिछड़ गया है। मुल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के संयोजक प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि मीडिया के अभूतपूर्व तकनीकी विकास के बावजूद मानव सरोकार और मानवीय मूल्य हासिये पर आ गये हैं। मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र. कु. करूणा ने कहा कि मीडिया की जवाबदेही वर्तमान परिस्थिति में बढ़ती जा रही है। कार्यक्रम का संचालन ब्र. कु. शारदा ने किया।